36 - II

36

Optional Paper

Sanskrit Lit.

Paper – II

Time : **3** Hours

Maximum Marks : **200**

IMPORTANT NOTES / महत्वपूर्ण निर्देश

(A) Please fill up the OMR Sheet of this Question Answer Booklet properly before answering. Please also see the directions printed on the obverse before filling it.
प्रश्नोत्तर पुस्तिका में प्रश्न हल करने से पूर्व उसके संलग्न ओ.एम.आर. पत्रक को भली प्रकार भर लें । उसे भरने हेतु उसके पृष्ठ भाग पर मुद्रित निर्देशों का अध्ययन कर लें ।

(B) The question paper has been divided into three Parts - **A**, **B** and **C**. The number of questions to be attempted and their marks are indicated in each part.
प्रश्न–पत्र अ, ब और स तीन भागों में विभाजित है । प्रत्येक भाग में से किये जाने वाले प्रश्नों की संख्या और उनके अंक उस भाग में अंकित किये गये हैं ।

(C) Attempt answers in **Hindi**.
उत्तर हिन्दी भाषा में दीजिये ।

(D) Answers to all the questions of each part should be written continuously in the script and should not be mixed with those of other parts. In the event of candidate writing answers to a question in a part different to the one to which the question belongs, the question will not be assessed by the examiner.
उत्तर पुस्तिका में प्रत्येक भाग के समस्त प्रश्नों के उत्तर क्रमवार देने चाहिये तथा एक भाग में दूसरे भाग के उत्तर नहीं मिलाने चाहिये । एक भाग में दूसरे भाग के प्रश्न के उत्तर लिखे जाने पर ऐसे प्रश्न को जाँचा नहीं जा सकता हैं ।

(E) The candidates should not write the answers beyond the limit of words prescribed in parts **A**, **B** and **C** failing this the marks can be deducted.
अभ्यर्थियों को भाग अ, ब और स में अपने उत्तर निर्धारित शब्दों की सीमा से अधिक नहीं लिखने चाहिये। इसका उल्लंघन करने पर अंक काटे जा सकते हैं ।

(F) **In case the candidate makes any identification mark i.e. Roll No./Name/Telephone No./Mobile No. or any other marking either outside or inside the answer book, it would be treated as resorting to using unfair means. In such a case his candidature shall be rejected for the entire examination by the Commission.**
अभ्यर्थी द्वारा उत्तर पुस्तिका के अंदर अथवा बाहर पहचान चिन्ह यथा – रोल नम्बर / नाम / मोबाईल नम्बर / टेलीफोन नम्बर लिखे जाने या अन्य कोई निशान इत्यादि अंकित किये जाने को अनुचित साधन माना जायेगा। आयोग द्वारा ऐसा पाये जाने पर अभ्यर्थी की सम्पूर्ण परीक्षा में अभ्यर्थिता रद्द कर दी जायेगी ।

BLANK PAGE

अंक : 40

नोट : समस्त २० प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न के लिये २ अंक निर्धारित है। उत्तर १५ शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिये।

१ महाभारत के रचयिता कौन हैं ? इसमे कितने पर्व हैं ? तथा इसका न्यायसंगत रचनाकाल क्या है ?

२ महाकवि श्रीहर्ष की कृतियों के नाम लिखिये ।

३ विशाखदत्त की प्रसिद्ध रचना का नाम व उनकी नाट्यविद्या भी लिखिये ।

४ 'बुद्धचरितम्' की प्रमुख विशेषता का वर्णन कीजिये ।

५ पंचतन्त्र के लेखक कौन हैं ? इनकी रचना का मुख्य उद्देश्य क्या है ?

६ वासवदत्ता किस कवि की रचना है ?

७ पूर्वरूप सन्धि के सूत्र को सोदाहरण लिखिये ।

८ देव, देवनीय, देवक, देवना शब्दों के प्रकृति प्रत्यय लिखिये ।

९ मध्यम व्यायोग की कथावस्तु का स्रोत कौन–सा ग्रन्थ है ?

१० उज्वल, सन्यास, हनुमान, लब्धप्रतिष्ठित के शुद्ध रूप लिखिये ।

११ अथर्ववेद की कितनी शाखायें हैं, उनके नाम लिखिये ?

१२ भारतीय संस्कृति में कितने संस्कार हैं ? आजकल कितने संस्कार किये जाते हैं किन्हीं पाँच संस्कारों के नाम लिखिये, जिनका प्रश्नपत्र में उल्लेख नहीं है ।

१३ भारतीय संस्कृति में दैनिक महायज्ञ कितने हैं ? उनके नाम लिखिये ।

१४ वेदों पर आधारित सभी धर्मों का बोधक-ग्रन्थ कौन-सा है, तथा इसके प्रणेता कौन हैं ?

१५ भारतीय संस्कृति के अनुसार नामकरण संस्कार किस प्रकार किया जाता है ?

१६ नाट्य शब्द का अर्थ बताते हुए नाट्यशास्त्र को भरतनाट्यम् क्यों कहा जाता है ?

१७ चाणक्य कौन थे ? इनके प्रसिद्ध ग्रंथों के नाम लिखिये ।

१८ बृहत्कथा के लेखक का नाम तथा वह किस राजा का कृपा पात्र था ?

१९ 'पत्रदूतम्' किस कवि की रचना है, तथा इसमें किसका वर्णन है ?

२० महाकवि भासने कितने नाटक लिखे हैं ? उनके नामों का भी उल्लेख कीजिये ।

अंक : 60

नोट : समस्त १२ प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न के ५ अंक निर्धारित हैं। उत्तर ५० शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

२१ 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' नाटक के नाम की सार्थकता सिद्ध करते हुए 'तत्र रम्या शकुन्तला' के औचित्य को समझाइये ।

२२ 'उत्तररामचरितम्' कवि ने किस रस को परिपुष्ट किया है ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिये ।

२३ उपनयन संस्कार के महत्व का प्रतिपादन कीजिये ।

२४ भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों का सारगर्भित विवेचन कीजिये ।

२५ महाकवि माघ को घण्टा माघ क्यों कहा जाता हैं ?

२६ वैश्य के प्रमुख कर्तव्यों का वर्णन कीजिये ।

२७ 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक का संक्षिप्त परिचय दीजिये ।

२८ समास कितने प्रकार के होते हैं ? सोदाहरण लिखिये ।

२९ अद्यतन भूत एवं अनद्यतन भूतकाल में अन्तर समझाइये ।

३० 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' सूत्र की व्याख्या कीजिये ।

३१ 'भू' धातु विधिलिङ् उत्तम पुरुष, 'एध्' धातु लट् लकार प्रथम पुरुष, 'अद्' धातु लोट् लकार मध्यम पुरुष, 'कृञ' धातु प्रथम पुरुष के रूप लिखिये ।

३२ प्रष्ठौहः, किलँ ह्लादयति, सन्नच्युतः,अहर्गण, सैष दाशरथिरामः, का विच्छेद कीजिये तथा सन्धि की स्थिति में सन्धि का नाम भी लिखिये ।

भाग – स　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　अंक : 100

नोट : कोई भी ५ प्रश्न कीजिये। प्रत्येक प्रश्न के लिए २० अंक निर्धारित है। उत्तर २०० शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

३३ 'दशकुमारचरितम्' के अनुसार दण्डी की गद्यशैली की समालोचना कीजिये ।

३४ 'मनुस्मृति' के महत्व पर प्रकाश डालिये ।

३५ 'नैषधं विद्वदौषधम्' की सुस्पष्ट व्याख्या कीजिये ।

३६ आश्रमों के महत्व का प्रतिपादन कीजिये ।

३७ निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संस्कृत में निबंध लिखियें :

(क) आचारः परमो धर्मः ।

(ख) संस्कृतिः संस्कृताश्रिता ।

(ग) वर्तमान सन्दर्भे वेदानामुपादेयत्वम् ।

(घ) माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः ।

(ङ) सतां सङ्गो हि भेषजम् ।

(च) आतङ्कवादः ।

३८ विश्वजिन्नाम्नि यज्ञे सर्वमात्मीयं कोषजातमृत्विग्भ्यो याचकेभ्यश्च दत्वा मृण्मयपात्रेणैव रघुः सर्वमात्मीयं स्नानादिकं देहकृत्यं चकार । ततः कियत्समयानन्तरं महर्षेवतन्तोः शिष्यः कौत्सनामा ऋषिश्चतुर्दशविद्या अधिगत्य स्वगुरवे दक्षिणाम् दातुकामः रघोः समीपमाययौ । रघुः स्वगृहमागतमतिथिं कौत्सं विलोक्य यथा विध्यर्ध्यादिभिस्तमपूजयत् । कुशलप्रश्नानन्तरं कौत्सस्तमभाषत ''राजन् भवादृशे धर्मात्मनि प्रजापालके भूपतौ सति कथं न प्रजाः सुखिताः स्युः ।''

उपर्युक्त गद्यभाग का हिन्दी में अनुवाद कीजिये ।

३९ निम्नलिखित गद्यखण्ड का संस्कृत में अनुवाद कीजिये ।

महामंत्री शुकनासने युवराज चन्द्रापीड को उपदेश देना आरम्भ किया – जन्मजात प्रभुत्व, नवयौवन, अनुपम सौंदर्य और असाधारण शक्ति ये चारों महान् अनर्थ के कारण हैं । इनमें से एक-एक सभी अनर्थों के कारण हैं, ये सभी एकत्र हों तो कहना ही क्या । यौवनारम्भ में बहुधा शास्त्ररूपी जल से धुली हुई निर्मल बुद्धि भी कलुषित हो जाती है । विषय भोगरूपी मृगतृष्णा इन्द्रियरूपी मृगों को हरनेवाली है और इसका कोई अन्त नहीं है और उसमें लिप्त हुए पुरुष का नाश कर देती है ।